ISSN: 2456–5474 RNI No.UPBIL/2016/68367 Vol.-5* Issue-12* January- 2021
Innovation The Research Concept

महात्मा गाँधी के सत्याग्रह का दिव्य संदेश व वर्तमान परिदृश्य

Divine Message and Present Scenario of Mahatma Gandhi's Satyagraha

Paper Submission: 00/00/2020, Date of Acceptance: 00/00/2020, Date of Publication: 00/00/2020

शालिनी गुप्ता
सहायक प्राध्यापक,
इतिहास विभाग,
जवाहर लाल नेहरू पो0 मेमो0 कालेज, बाराबंकी,
उत्तर प्रदेश, भारत

सारांश

आज देश–विदेश में जन आन्दोलन पर व्यापक चर्चा हो रही है। हाल ही में मिस्र और अन्य अरब देशों में जन आन्दोलन के जरिये सत्ता परिवर्तन दिखाई दिया है। वहीं भारत में भी व्यवस्था परिवर्तन हेतु आन्दोलन हो रहे हैं। भारत में इस हेतु अहिंसक आन्दोलन का सहारा लिया जा रहा है, जो गाँधी से प्रेरणा प्राप्त कर रहे हैं। विचारणीय बिन्दु यह है कि भारत में आज हो रहे आन्दोलन सत्याग्रह का ही रूप है। सत्याग्रह पर विमर्श तथा उसके सन्देशों को जानना आवश्यक हो गया है।

Today, mass movement is being held in the country and abroad. Recently, there has been a change of power in Egypt and other Arab countries through mass movement. At the same time, there are movements in India to change the system. In India, non-violent movement is being taken for this, who are getting inspiration from Gandhi. The point to be considered is that the movement happening in India today is a form of Satyagraha. It has become necessary to discuss the Satyagraha and know its messages.

मुख्य शब्द : अहिंसक, पेशीव रेसिस्टेंस, दृढ़ प्रस्तुतीकरण, अवज्ञा, उपवास, आत्मसंशा, अत्यधिक विनम्रता, असीम धैर्य, प्रदीप्त आस्था, चौखम्भा राज्य', सप्तक्रान्ति की अवधारणा।

Non-Violent, Muscular Resistance, Strong Submission, Disobedience, Fasting, Self-Respect, Excessive Humility, Boundless Patience, Illumined Faith, Chakhambha Rajya ', Concept Of Saptakranti

प्रस्तावना

सत्याग्रह का अर्थ है होता है, 'सत्य के प्रति आग्रह' अर्थात् 'सत्य' (जिसमें अहिंसा भी सम्मिलित है) को मानकर किसी वस्तु के लिए आग्रह करना अथवा सत्य और अहिंसा से उत्पन्न होने वाला। इस प्रकार सत्याग्रह सत्य के लिए तपस्या है।[1] सत्याग्रह का सर्वप्रथम प्रयोग गाँधी जी ने दक्षिण अफ्रीका में किया था, वहीं पर गाँधी ने एक पम्फलेट निकाला, जिसमें उन्होंने अन्याय के विरूद्ध जिस शैली का जिक्र किया, उसे ही 'सत्याग्रह' कहा गया। इसमें गाँधी जी ने लिखा है, ''हमारी जो शैली है, घृणा को प्रेम से जीतने की, हम व्यक्ति को दण्डित करना नहीं चाहते, बल्कि सिद्धान्ततः उनके हाथों यातनायें भोगना चाहते हैं।[2] प्रारम्भ में गाँधी जी ने इसे पेशीव रेसिस्टेंस कहा, परन्तु बाद में उन्होंने इस षैली को सत्याग्रह नाम दिया। गाँधी जी ने स्वयं लिखा है, 'सत्याग्रह' का अंग्रजी पर्याय Truth Force होता है और मैं समझता हूँ कि टॉलस्टाय ने इसे आत्मशक्ति या प्रेमशक्ति कहा है और यह ऐसा ही है।[3] सत्य के सौम्य परन्तु दृढ़ प्रस्तुतीकरण के लिए गाँधी जी ने जिस अहिंसक तकनीकी का विकास किया, उसे सत्याग्रह कहा जाता है।

गाँधी जी का सत्याग्रह दर्शन सत्य के सर्वोच्च आदर्ष से उत्पन्न हुआ है। यदि सत्य ही परम तत्व है, तो उसके उपासक का परम कर्त्तव्य हो जाता है कि वह सत्य की कसौटी और उसके आधारों की रक्षा करें। गाँधी जी के अनुसार सभी प्रकार के अन्याय, उत्पीड़न और पोषण के विरूद्ध आत्मबल का प्रयोग ही सत्याग्रह है। कष्ट सहन तथा विश्वास आत्मबल के गुण हैं।

सत्य के अनुकरण में विरोधी पर हिंसक वार करने की अनुमति नहीं है, बल्कि उसे धैर्य तथा सहानुभूति से अपनी गलती को दूर करने के लिए प्रेरित

किया जाना चाहिए। तथ्य यह है कि कोई घटना या वस्तु, जो एक व्यक्ति को सही लगती है, वही दूसरे को गलत लग सकती है। वस्तुतः गाँधी जी जैन दर्शन के स्यादवाद सिद्धान्त से प्रभावित थे, जिसके अनुसार एक ही वस्तु को देखने के एक से अधिक दृष्टिकोण हो सकते हैं। जो व्यक्ति जिस देश, काल, परिस्थिति से सत्य के जिस पक्ष को देखता है, वह उसी को सत्य मान लेता है। इसलिए गाँधी जी सत्याग्रह में धैर्य व सहानुभूति को अत्यधिक महत्व देते हैं। यहाँ धैर्य का अर्थ आत्मपीड़न से है। इस प्रकार सत्याग्रह के सिद्धान्त का अर्थ है, विरोधी के बजाय स्वयं को पीड़ित करके सत्य को प्रमाणित करना।[4] अर्थात् प्रतिपक्षी को कष्ट देकर नहीं, स्वयं कष्ट सहकर सत्य की रक्षा करना।[5]

यह सत्य है कि शरीर से जो दुबला हो वह भी सत्याग्रही हो सकता है। एक आदमी भी (सत्याग्रही) हो सकता है और लाखों लोग भी हो सकते हैं। पुरूष भी सत्याग्रही हो सकता है, स्त्री भी हो सकती है। उसे अपनी सेना तैयार करने की आवश्यकता नहीं रहती। उसे पहलवानों की कुश्ती सीखने की आवश्यकता नहीं रहती। उसने अपने मन को वर्ष में किया कि फिर वह वनराज–सिंह की तरह गर्जना कर सकता है, जो उसके दुश्मन बन बैठे हैं उनके दिल इस गर्जना से फट जाते हैं।

सत्याग्रह ऐसी तलवार है, जिसके दोनों ओर धार है। उसे चाहे जैसे काम में लिया जा सकता है। जो उसे चलाता है और जिस पर वह चलाई जाती है, वे दोनों सुखी होते हैं। वह रक्त नहीं बहाती, अपितु उससे भी बड़ा परिणाम ला सकती है। उसको जंग नहीं लग सकती। उसे कोई (चुराकर) ले नहीं जा सकता। अगर सत्याग्रही दूसरे सत्याग्रही के साथ स्पर्द्धा में उतरता है, तो उसमें उसे थकान लगती ही नहीं। सत्याग्रही की तलवार को मयान की आवश्यकता नहीं रहती। उसे कोई छीन नहीं सकता। फिर भी सत्याग्रह को आप कमजोरों का हथियार मानें तब तो उसे मतिभ्रम ही कहा जायेगा।[6]

सत्याग्रह सत्य व प्रेम पर अधिकृत होना चाहिए। गाँधी जी ने शान्तिमय व अहिंसक संघर्ष के लिए मापदण्ड का निर्धारण किया। सर्वप्रथम समस्याओं का अध्ययन तथा साध्य के आधार पर सत्यता को स्थापित करना। उसके बाद समस्या निदान हेतु उचित पक्ष को आवेदन या निवेदन करना। तब भी यदि समस्या समाधान नहीं होता है, तब दबाव हेतु सभा, प्रदर्शन करना तथा समाधान के लिए संघर्श की खुली घोषण, हड़ताल, अवज्ञा, उपवास तथा अन्तिम अस्त्र के रूप में आमरण–अनशन को प्रयोग में लाने की बात कही है। इन सबके बीच यह आवश्यक है कि लक्ष्य साफ व स्पष्ट होना चाहिए और रणनीति सरल तथा खुली हो। सत्य के प्रत्येक पक्ष को खुला व पारदर्शी होना चाहिए, ताकि शंका के लिए कोई स्थान न हो। सत्याग्रह हेतु एक बहुत ही महत्वपूर्ण प्रक्रिया है कि सत्याग्रह चाहे जिस स्तर पर हो सत्याग्रही को संवाद के लिए सदैव तैयार रहना चाहिए। इसके लिए आवश्यक है कि समस्या को सही तरीके से पहचाना जाये और उसके समाधान का मार्ग स्पष्ट हो। संवाद, समस्या समाधान के लिए एवं मतभेद निवारण का सर्वोत्तम माध्यम है। अतः सत्याग्रही को शुरू से अन्त तक सदैव संवाद हेतु प्रयासरत रहना चाहिए।

सत्याग्रह एक चौतुहा तलवार है, जिसका किसी भी तरह से इस्तेमा किया जा सकता है। यह उसका भी भला करता है, जो इसका इस्तेमाल करता है और उसका भी जिसके प्रति इसका प्रयोग किया जाता है। यह किसी को हानि नहीं पहुँचाता है।[7] इसका दर्शन स्पष्ट व सुरक्षित है, क्योंकि यदि सत्याग्रह का उद्देश्य सच्चा नहीं है, तो हानि केवल सत्याग्राही को ही पहुँचती है। वास्तव में उसको भी हानि नहीं होती, बल्कि वह भी सत्य के वास्तविक पक्ष को जान पाता है। सत्याग्रह का आधार आत्मबल है। आत्मबल की अभिव्यक्ति अहिंसा पूर्वक होनी चाहिए। यह बल किसी अन्य व्यक्ति को पीड़ा नहीं पहुँचाता है। इसलिए जब भी उसका दुरूप्योग किया जाता है तो यह केवल इसके प्रयोगकर्ता को ही हानि पहुँचाता है। उसको कभी नहीं, जिसके प्रति इसका प्रयोग किया जाता है। सद्गुण की भाँति यह अपना पुरस्कार स्वयं है। आत्मबल के प्रयोग में असफलता की कोई गुंजाइश नहीं होती है।[8] सत्याग्रही के लिए साधन की शुद्धता साध्य से अधिक महत्वपूर्ण होता है। सत्याग्रही सभी प्रकार के कष्टों से गुजरते हुए सामने वाले के हृदय परिवर्तन में भरोसा रखता है। सत्याग्रह में कोई विजेता और कोई पराजित नहीं होता है।[9] इसी शक्ति का प्रयोग यीशु, सुकरात, बुद्ध आदि ने किया और प्रतिपक्षी के हृदय परिवर्तन हेतु मृत्यु तक का वरण किया, किन्तु सत्य का पक्ष नहीं छोड़ा। सत्याग्रह की अवधारणा हिंसा के पूर्ण स्थानापन्न के तौर पर की गयी है। सत्याग्रह का संघर्ष उसके लिए है, जो भावना का दृढ़ हो, जिसके मन में न संशय हो न धीरूता। सत्याग्रह हमें जीने और मरने, दोनों की कला सिखाता है। देहधारियों का जन्म और मरण तो अवश्यम्भावी है, मनुष्य को पशु से भिन्न सिद्ध करने वाली चीज सिर्फ यह है कि मनुष्य अपनी आत्म सिद्धि के लिए बराबर सचेत प्रयास करता रहता है।[10]

सार रूप में सत्याग्रह और कुछ नहीं, बल्कि रानीतिक अर्थात् राष्ट्रीय जीवन में सत्य–अहिंसा और शालीनता की प्रतिष्ठा है।[11] सत्याग्रह पूर्ण आत्मसंशा, अत्यधिक विनम्रता, असीम धैर्य तथा प्रदीप्त आस्था है एवं अपना पुरस्कार स्वयं है। सत्याग्रह सत्य की अथक खोज व उस तक पहुँचने का दृढ़–संकल्प है।[12] यह ऐसा बल है, जो चुप–चाप और जाहिर तौर पर धीरे–धीरे काम करता है, परन्तु वास्तविकता यह है कि संसार में इससे त्यादा प्रत्यक्ष और द्रुतगति से काम करने वाला कोई दूसरा बल नहीं है।[13]

सत्याग्रह ही एक मात्र ऐसा साधन है, जिससे हिंसा को समूल नष्ट किया जा सकता है। हिंसा का परिणाम कभी–भी शान्ति नहीं हो सकती। हिंसा द्वारा स्थापित शान्ति दीर्घजीवी नहीं होती। जैसे ही नियन्ता की शक्ति कमजोर होती है, पुनः प्रति हिंसा द्वारा उस व्यवस्था को बदलने हेतु प्रयास होने लगते हैं, जिसका उदाहरण वर्तमान विश्व के अनेक देशों में देखा जा सकता है। जैसा कि ट्यूनीशिया, मिस्र, लीबिया, बहरीन आदि देशों में शान्ति में हो रहा है। इन देशों में शान्ति शक्ति प्रयोग द्वारा स्थापित किया गया था, किन्तु जब आम लोगों में

अपने अधिकार के प्रति संचेतना जागृत हुई और लगने लगा कि उनका शोषण हो रहा है, तो वे पोशक शासक के विरूद्ध उठ खड़ें हुए। लेकिन उन अधिकारों को प्राप्त करने का उनके साधन वही होते हैं, जो पूर्व शान्ति स्थापित करने में प्रयोग की गयी थी। हम कह सकते हैं कि किसी वस्तु के उत्थान में पतन की पूर्व पीठिका निहित होती है और यही हिंसा के अर्थ का मनोविज्ञान है। जबकि सत्याग्रह से स्थापित की गयी शान्ति व्यवस्था दीर्घजीवी होती है और जब कभी भी इस व्यवस्था में परिवर्तन की आवश्यकता महसूस होती है तो पुनः इसी मार्ग का सहारा लिया जाता है, जिसका जीता–जागता उदाहरण आज का भारत है। आजाद भारत में लोहिया, जे0पी0 व अन्ना के आन्दोलन इसी के जीवन्त उदीण हैं। अन्य व्यक्तिगत सत्याग्रह आन्दोलन भी इसी की पुष्टि करते हैं।

समाजवादी दार्शनिक राम मनोहर लोहिया ने सन् 1956 में भारत सरकार से कहा, ''आजाद भारत में सार्वजनिक स्थानों से अंग्रेजों की मूर्तियाँ हटा दी जायें, अन्यथा सोशलिस्ट पार्टी इसके लिए सत्याग्रह करेगी।'' जिस पार्टी का गठन ही सत्याग्रह के कोख से हुआ था, उसके ही नेता और भारत के प्रथम प्रधानमंत्री जवाहर लाल नेहरू ने कहा, ''जनतंत्र में सत्याग्रह की कोई जरूरत नहीं है। लोहिया ने कहा कि जब तक सरकारी और सार्वजनिक क्षेत्र मदें अन्याय है, तब तक सत्याग्रह की उपयोगिता है।''[14]

लेनिन ने कहा था सरकारें दमन की मशीन होती हैं, इस अर्थ में गाँधी, लेनिन व लोहिया विद्रोहियों की पंक्ति में खड़े होते हैं। जब भारत सरकार ने गाँधी के रामराज्य से किनारा कर लिया, तब लोहिया ने रामराज्य के दर्शन को बढ़ाने के लिए 'चौखम्भा राज्य' कार्यक्रम शुरू किया, किन्तु संत्तातुर राजनेताओं ने अंग्रेजों की बनायी व्यवस्था पर ही चलना उचित समझा और लोहिया का व्यवस्था परिवर्तन का प्रयास पूर्ण नहीं हुआ। उनके तमाम प्रयासों के बावजूद सन् 1967 में लोहिया की मृत्यु से उनका सत्याग्रह (सप्त क्रान्ति की अवधारणा) सफल नहीं हो सकी और व्यवस्था में परिवर्तन का कोई प्रयास पूर्ण न हो सका, तब एक और सत्याग्रह की आवश्यकता महसूस की जाने लगी, जिसकी परिणति जे0पी0 के सम्पूर्ण क्रान्ति के आन्दोलन के रूप में हुई। इस क्रान्ति के रूप में जनतंत्र में जनता ने शासकों के पोषण के एक क्रूर दौर को देखा और जनतंत्र शर्मिन्दा हुआ। फलतः सरकार में परिवर्तन हो गया और व्यवस्था में भी कुछ परिवर्तन हुआ और अनेक जनहित की योजनाओं का षुभारम्भ हुआ।

निष्कर्ष

सन् 1990 के दशक में उदारीकरण, भूमण्डलीकरण का रास्ता अपनाया गया, जिससे पोषण के अनेक नये रूप प्रकट हुए और भारतीय जनमानस में असन्तोष बढ़ता गया, जिससे पुनः एक सत्याग्रह की आवश्यकता महसूस की जाने लगी। हलांकि स्वतंत्रता से लेकर सन् 2010 तक अनेक बार अलग–अलग मुद्दों को लेकर सत्याग्रह किया गया। सुन्दरलाल बहुगुणा द्वारा चलाया गया 'चिपको आन्दोलन' सरदार सरोवर बाँध से उपजी पुनर्वास की समस्या को लेकर चलाया गया मेधा पाठकर का आन्दोलन, 21वीं सदी के प्रथम दषक के प्रारम्भ में मणिपुर राज्य में स्पेशल फोर्स द्वारा चलाये गये अभियान के विरूद्ध इरोम चानू शर्मिला का सत्याग्रह आन्दोलन जो आज भी जारी है। स्वतंत्रता के बाद जितने भी आन्दोलन हुए उनमें सत्याग्रह का पुट विद्धमान् है। हालांकि इन सत्याग्रहों में कुछ का स्वरूप क्षेत्र विशेष तक ही सीमित था। ऐसे में भूखमरी, महामारी (इन्सेफ्लाटीस, डेंगू, प्लेग, स्वाइन फ्लू) किसानों द्वारा आत्महत्या, जबरन भूमि अधिग्रहण, बेकारी, भ्रष्टाचार, विदेशों में जमा काला धन जैसे प्रयत्नों ने लोगों को अन्दर से खोखला कर दिया और भारतीय आम जनमानस इससे निपटने के लिए एक जन आन्दोलन की तैयारी करने लगे और उन्हें सिर्फ दरकार था एक सामाजिक नेता की, जिसकी पूर्ति 21वीं सदी के दूसरे दशक के प्रारम्भ में अन्ना हजारे के रूप में हुई। वर्तमान समय में व्यवस्था परिवर्तन की लड़ाई में अन्ना क्रान्ति भी सत्याग्रह का एक रूप है। अन्ना क्रान्ति भी अहिंसा पर आधारित है, जो अपनी सफलता के लिए जनता पर निर्भर है। जहाँ विश्व के कुछ देशों में हिंसक क्रान्ति का सहारा लिया जा रहा है, वहीं आज भारत में बिना एक बूंद रक्त बहाये, अहिंसक क्रान्ति के माध्यम से व्यवस्था परिवर्तन की बात की जा रही है। यह गाँधी की विश्व को सबसे बड़ी देन है और आज विश्व इसे स्वीकार कर रहा है और यही महात्मा गाँधी के सत्याग्रह का दिव्य सन्देश है।

सन्दर्भ ग्रन्थ–सूची

1. *महात्मा गाँधी, 'यंग इण्डिया', भाग–2 पृ0–838।*
2. *प्रसाद, महादेव, 'महात्मा गाँधी का समाज दर्शन', हरियाणा साहित्य अकादमी, चण्डीगढ़, 1989, पृ0–124।*
3. *प्रसाद, महादेव, 'महात्मा गाँधी का समाज दर्शन', हरियाणा साहित्य अकादमी, चण्डीगढ़, 1989।*
4. *रिपोर्ट ऑफ द कमीशन, 'एप्वाइन्टेड ऑफ द पंजाब', सब कमेटी ऑफ द इण्डिया, नेशनल कांग्रेस, के0 संथानम द्वारा प्रकाशित, लाहौर– 1920।*
5. *स्पीचेज एण्ड राइटिंग ऑफ महात्मा गाँधी, जी0 नटेशन एण्ड कं0, मद्रास, पृ0–501 ।*
6. *महात्मा गाँधी 'हिन्द स्वराज्य', अरावली प्रकाषन, जयपुर प्रथम संस्करण 2009 पृ0– 73 ।*
7. *महात्मा गाँधी, 'हिन्द स्वराज्य', नव जीवन पब्लिशींग हाउस, अहमदाबाद, 1938, चतुर्थ संस्करण– 1958।*
8. *स्पीचेज एण्ड राइटिंग ऑफ महात्मा गाँधी, जी0 नटेशन एण्ड कं0, मद्रास–1933 चतुर्थ संस्करण।*
9. *सुरेन्द्र कुमार (सचिव गाँधी शान्ति प्रतिष्ठान), जन आन्दोलन में गाँधी, राष्ट्रीय सहारा, 01 अक्टूबर, 2011*
10. *महात्मा गाँधी, 'हरिजन' 07.04.1946, पृ0–74 ।*
11. *महात्मा गाँधी, 'यंग इण्डिया' 19.03.1925, पृ0–95 ।*
12. *महात्मा गाँधी, हरिजन सेवक' 15.04.1933, पृ0–08 ।*
13. *महात्मा गाँधी, 'यंग इण्डिया' 04.06.1925, पृ0–189 ।*
14. *ग्रामोत्थान संवाद, (गुजेश्वरी प्रसाद, पंचायती राज के बिखरते सपने), डी0–55, रिट्रीट अपार्टमेन्ट, पटपरगंज, दिल्ली–2010 ।*